भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2427
24 मार्च, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए

पृथ्वी विज्ञान संस्थान का पुनर्निर्माण

2427. डॉ. सी. एम.रमेश:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार वैज्ञानिक आधार पर पृथ्वी विज्ञान संस्थान का पुनर्निर्माण करने पर विचार कर रही है;

(ख) क्या अन्य देशों में ऐसे संस्थान के लिए उपलब्ध अत्याधुनिक सुविधाओं के संबंध में कोई अध्ययन करवाया गया है, तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या देश के संस्थान का उसी तर्ज पर आधुनिकीकरण करने के लिए ऐसे संस्थानों का अध्ययन करने हेतु कभी भी वैज्ञानिकों के दल को विदेश भेजा गया है और इस संबंध में संशोधित वित्तीय जानकारी, यदि कोई है, प्रस्तुत की गई थी, तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय पहले महासागर विकास विभाग था, जिसे जुलाई 1981 में बनाया गया था। भारत सरकार ने फरवरी 2006 में महासागर विकास विभाग को महासागर विकास मंत्रालय के रूप में अधिसूचित किया।

जुलाई 2006 में, पृथ्वी प्रणाली के सभी पांच संघटकों अर्थात वायुमंडल, जलमंडल, हिमांकमंडल, स्थलमंडल और जैवमंडल के लिए महासागर विकास मंत्रालय को पुनर्गठित करके नया पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय बनाया गया था। ऐसा करने से भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, दिल्ली; भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान, पुणे; और राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, नोएडा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के प्रशासनिक कार्यक्षेत्र में आ गए। सरकार ने अंतरिक्ष आयोग (भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के प्रशासन के लिए जिम्मेदार सरकारी विभाग) और परमाणु ऊर्जा आयोग (परमाणु ऊर्जा विभाग का शासी निकाय) की तर्ज पर पृथ्वी आयोग स्थापित करने का भी अनुमोदन दिया है।

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केन्द्र, तिरुवतनंपुरम (एनसेस), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय प्रशासन के अधीन एक स्वायत्त अनुसंधान एवं विकास केंद्र, 2014 में केरल राज्य सरकार से अधिग्रहित किया गया था तथा ठोस पृथ्वी अनुसंधान और पृथ्वी प्रणाली विज्ञान के अन्य संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान करने के लिए उन्नत और अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक प्रयोगशालाएं स्थापित करने के लिए अत्यधिक प्रयास किए गए थे।

एनसेस की वैज्ञानिक गतिविधियां वर्तमान में प्रमुख वैज्ञानिक कार्यक्रम 'जियोडायनामिक्स एंड सर्फेस प्रोसेस (जीएसपी)' के तहत आयोजित की जाती हैं, जिसमें प्रायद्वीपीय भारत के भू-गतिकी विकास, तटीय प्रक्रमों की जटिलताओं, सतह और भूजल विज्ञान, महत्वपूर्ण क्षेत्र प्रक्रमों तथा प्राकृतिक खतरों पर ध्यान दिया गया है। इस संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों को पुन: स्थापित करने, उपलब्ध अनुसंधान सुविधाओं के अधिकतम उपयोग के लिए तथा वैज्ञानिक प्रशासन की बेहतरी के लिए, एनसेस के अनुसंधान समूहों की संख्या को पूर्ववर्ती चार प्रमुख अनुसंधान क्षेत्रों अर्थात् भूपटल प्रक्रम, तटीय प्रक्रम, वायुमंडलीय प्रक्रम और जलविज्ञानीय प्रक्रम से बढ़ाकर छह अर्थात् ठोस पृथ्वी अनुसंधान, भूपटल गतिविज्ञान, समुद्री भूविज्ञान, जल विज्ञान, जैव भू-रसायन विज्ञान और वायुमंडलीय विज्ञान कर दिया गया।

वर्तमान में राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र, तिरुवनंतपुरम में सुधार का कोई प्रस्ताव नहीं है।

(ख) इस प्रकार अन्य देशों में एनसेस के पास उपलब्ध उच्च सुविधाओं के बारे में कोई अध्ययन नहीं किया गया है। एनसेस ने पिछले कुछ वर्षों के दौरान अपने बुनियादी ढांचे और प्रयोगशाला सुविधाओं का निर्माण जारी रखा है। पृथ्वी विज्ञान अध्ययन के क्षेत्र में अग्रणी अनुसंधान करने के लिए कई अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक सुविधाएं भी खरीदी गईं।

(ग) वैज्ञानिक नियमित रूप से विदेशों में विभिन्न संस्थानों के संपर्क में हैं, संयुक्त परियोजनाओं में सहयोग कर रहे हैं, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग ले रहे हैं और अनुसंधान परामर्श परिषद में विदेशों से विशेषज्ञों को शामिल कर रहे हैं, जो वित्त की उपलब्धता के आधार पर संस्थान की उन्नत आधुनिक प्रयोगशालाओं में आवश्यक आधुनिकीकरण की अनुमति देते हैं। इसी तर्ज पर एनसेस के आधुनिकीकरण के लिए विदेशों में ऐसे संस्थान का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिकों की कोई विशिष्ट टीम नहीं भेजी गई है।

*****